महिला जनप्रतिनिधियों का राष्ट्रीय सम्मेलन, नई दिल्ली, मार्च 5–6, 2016 में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का समापन भाषण

1. प्रतिष्ठित अतिथिगण, माननीय प्रधानमंत्री जी के अत्यन्त प्रेरक, सारगर्भित भाषण के बाद मैं नहीं समझती कि मुझे कुछ और कहने की आवश्यकता है। इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि इस समापन समारोह की शोभा और महत्व बढ़ाने तथा उनके विचारोत्तेजक उद्बोधन के लिए हम माननीय प्रधानमंत्री जी के बेहद आभारी हैं।

2. माननीय प्रधानमंत्री जी ने हमेशा कहा है कि महिलाएं विकास में बराबर की भागीदार हैं। देश के प्रधानमंत्री के रूप में आप लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए और महिलाओं के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए लीक से हट कर काम कर रहे हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत **'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'** योजना कन्याओं का जीवन, सुरक्षा और शिक्षा सुनिश्चित करके लैंगिक विषमता (gender inequality) की जड़ पर प्रहार करती है। इस सम्मेलन में आपकी सहभागिता प्रमाण है कि आप महिलाओं के सरोकारों, जरूरतों और उन्हें सशक्त करने के लिए कितने गंभीर और प्रतिबद्ध हैं। देश भर से आई महिला जन प्रतिनिधि आपकी इस प्रेरक और नेतृत्वकारी सहभागिता के लिए आपकी हृदय से आभारी हैं।

3. प्रधानमंत्री जी, आपने 3 मार्च को राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर बहस के अंत में बोलते हुए अपने भाषण के आरंभ में ही इस सम्मेलन और अध्यक्षीय शोध कदम की स्थापना की जिन शब्दों में जो प्रशंसा की उससे मैं तथा सम्मेलन की सभी प्रतिभागी अभिभूत हैं।

4. मैं हमारी पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल जी की भी हृदय से आभारी हूं कि उन्होंने आज यहां उपस्थित होकर हम सबका मार्गदर्शन किया है। देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंचनेवाली प्रथम महिला होने के कारण और अपने गरिमापूर्ण व्यक्तित्व तथा सार्वजनिक जीवन के व्यापक अनुभव से आप देश की महिलाओं के लिए, विशेषकर महिला सांसदों और विधायकों के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं। आपके विद्वतापूर्ण उद्बोधन एवं सम्माननीय उपस्थिति ने इस सम्मेलन की गरिमा को बढ़ाया है।

5. मित्रो, यह सम्मेलन मेरे लिए भी अभूतपूर्व रहा है। चूंकि यह सम्मेलन **एक नए विचार पर** आधारित था, इसलिए मेरे मन में भी **विचार** था कि क्या हमारी महिला जनप्रतिनिधि इसकी मूल भावना को **आत्मसात कर अपनी भूमिका,** अपने और अपने काम के बारे में एक नए दृष्टिकोण को अपनाएंगी? लेकिन इसके आयोजन के

दौरान माननीय राष्ट्रपतिजी, उप–राष्ट्रपतिजी से लेकर प्रधानमंत्री जी, केन्द्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, पीठासीन अधिकारियों, हमारी महिला सांसदों तथा राज्यों की विधायिकाओं ने जिस उत्साह के साथ इस विचार को अपनाया और पूरी भागीदारी की, उससे मुझे बहुत संतोष हुआ कि **इस विचार की सार्थकता का सभी अनुभव करते हैं।**

6. इसमें जो चर्चाएं हुईं, नए–नए विचार सामने आए, अनुभवों का और सुझावों का आदान–प्रदान हुआ, विचार और काम की नई दिशाएं, नई सम्भावनाएं खुलीं, वे सब बेहद मूल्यवान हैं। अब हमने जो कुछ यहां पाया और तय किया है, उसे जमीन पर उतारना है।

7. मेरी मूल भावना इस सबके पीछे यह रही है कि अब समय आ गया है कि भारत की महिलाएं अपने लिए अधिकार, प्रावधान मांगना बंद करें, अपनी अन्तर्शक्ति (inner strength) को साधें और अपने कर्तृत्व से वह स्थान, प्रतिष्ठा, शक्ति और समानता हासिल करें जिसकी वे अधिकारी हैं। **मुझे लगा कि इस विचार को ताकत देने का सबसे प्रभावी माध्यम महिला जनप्रतिनिधि ही हो सकती हैं।**

8. इसलिए मुझे लगा कि एक ऐसा सम्मेलन किया जाए जिसमें सारी महिला जनप्रतिनिधि मिलकर केवल महिला–मुद्दों पर ही विचार न करें बल्कि राष्ट्र निर्माण के जो भी प्रमुख क्षेत्र हैं, उन सब पर चर्चा करें, अपनी भूमिका को नए तरीके से देखें और **एक नए विचार** और संकल्प के साथ काम करने का निश्चय करें।

9. एक उद्देश्य यह भी था कि विविध विकास मुद्दों के बारे में महिलाओं के अनुभव और दृष्टिकोण का लाभ उठाया जाए और उनके परिप्रेक्ष्य (perspective) को नीति–निर्माण (policy making) में शामिल किया जाए। अध्ययन बताते हैं कि महिलाओं की ऊंची राजनीतिक भागीदारी से तमाम क्षेत्रों में प्रत्यक्ष लाभ होता है, सामाजिक और आर्थिक विकास के आयामों के प्रति जन–सामान्य और प्रशासन दोनों में अधिक सक्रियता और संवेदनशीलता आती है।

10. आप शायद मेरी इस बात से भी सहमत होंगे कि इस सम्मेलन से हम सबको यह **प्रेरणा और विश्वास प्राप्त हुआ** है कि हम महिलाओं के साथ–साथ समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक विकास तथा सुशासन के सभी आयामों में अपनी विधायी और गैर–विधायी नेतृत्वकारी भूमिका के माध्यम से मूलभूत, प्रभावी और निर्माणकारी योगदान कर सकती हैं। यह विश्वास और यह संकल्प इस सम्मेलन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

11. मैं इस अवसर पर परम सम्माननीय राष्ट्रपति जी, आदरणीय उप–राष्ट्रपति जी और आदरणीय प्रधानमंत्री जी और आदरणीय प्रतिभा देवीसिंह पाटिल जी का इस सम्मेलन में उपस्थित होने तथा प्रेरणादायी मार्गदर्शन करने के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती हूं। मैं संसद के दोनों सदनों तथा हमारे राज्य विधानमंडलों की माननीय सदस्यों का **उनकी सक्रिय भागीदारी** और बौद्धिक योगदान के लिए धन्यवाद करती हूं। मैं राज्य विधान मंडलों के presiding officers का भी धन्यवाद करती हूं जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

12. बांग्लादेश की "जातीयो सोंगशद' की माननीय अध्यक्ष डॉ. शिरीन शर्मिन चौधरी ने विशेष तौर पर यहां आकर सम्मेलन की न केवल शोभा बढ़ाई है बल्कि अपने उद्बोधन से महत्वपूर्ण योगदान किया है। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

13. पूर्व लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार, गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबेन पटेल, दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित का कार्यसत्रों में अध्यक्ष के रूप में मार्गदर्शन करने के लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

14. हम विभिन्न पैनलों की प्रतिष्ठित सदस्य श्रीमती सुषमा स्वराज, डॉ. नज़मा हेपतुल्ला, श्रीमती मेनका गांधी, श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी, श्रीमती हरसिमरत कौर बादल, सुश्री उमा भारती, श्रीमती रंजना देसाई और श्रीमती शैलजा चन्द्रा के भी बहुत आभारी हैं जिन्होंने गहन और विविधता से भरे हुए अपने अनुभवों और विचारों को साझा किया जिससे संवाद का स्तर बहुत ऊंचा बना रहा।

15. विभिन्न सत्रों की संचालक श्रीमती किरण खेर, श्रीमती पूनम महाजन, श्रीमती सुप्रिया सुले, श्रीमती के. कविता, कुमारी सुष्मिता देव और श्रीमती पूनम मदाम की उनकी सक्रिय भागीदारी और योगदान के लिए भरपूर प्रशंसा की जानी चाहिए।

16. हम सबकी प्रिय और सांसद हेमा मालिनी जी एवं उनकी प्रतिभाशाली पुत्रियों ईशा और आहना के विशेष आभारी हैं जिन्होंने कल शाम अपनी **मनमोहक** नृत्य–नाटिका से हम सबके सांस्कृतिक अनुभवों को समृद्ध किया।

17. मैं यहां पर श्री प्रसून जोशी और उनकी पूरी टीम का हार्दिक धन्यवाद करना चाहती हूं जिन्होंने अलग–अलग जगहों और देशों में होने के बावजूद बहुत कम समय में सुन्दर और प्रेरक सम्मेलन गीत तैयार किया।

18. इस स्तर का सम्मेलन अनेक व्यक्तियों और विभागों के पूरे और हार्दिक सहयोग के बिना इतना सुचारु रूप से संपन्न नहीं हो सकता था। सम्मेलन की केन्द्रीय समिति के सदस्यों ने प्रत्येक मामले का बहुत बारीकी से संयोजन किया। लोक सभा के महासचिव श्री अनूप मिश्र, सचिव डॉ. डी. भल्ला, सम्मेलन के संयोजकद्वय श्री राहुल देव और श्री अभिलाष खांडेकर, सभी ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए बहुत मेहनत की है। मैं लोक सभा सचिवालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा संसद परिसर, विज्ञान भवन और अशोक होटल में कार्यरत अभिकरणों (agencies) के विभिन्न अधिकारियों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद करना चाहती हूं।

19. मैं अपनी बात का समापन अपने एक विचार और स्वामी विवेकानन्द के एक वाक्य से करना चाहती हूं।

"Rights, powers and prestige are not things to be demanded. They are for us to command."

और स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था–

"हम वही हैं जो हमारे विचारों ने हमें बनाया है। अतः, आप जो सोचते हैं, उसके विषय में सजग रहें। शब्द गौण हैं। विचार जीवित रहते हैं। वे दूर तक जाते हैं।'

मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन में व्यक्त किए गए और हृदयंगम किए गए विचार एक सशक्त भारत के निर्माण में हमारे प्रयासों को आलोकित करते रहेंगे।

20. मित्रो, 8 मार्च को हम अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाएंगे। इस वर्ष उसका विषय है–ऐसी समानता की प्रतिज्ञा करना, जिससे महिलाओं और बालिकाओं को उनकी महत्वाकांक्षाओं की प्राप्ति में सहायता के लिए प्रतिबद्धता हो, जाने हुए और अनजाने पूर्वाग्रहों को चुनौती दी जा सके, महिलाओं और पुरुषों का संतुलित नेतृत्व हो, समावेशी और लचीली संस्कृतियों (inclusive and flexible culture) का सृजन हो और महिलाओं तथा पुरुषों के योगदानों का समान मूल्यांकन किया जाए।

इस स्वप्न के साकार होने के लिए आप सभी को मेरी अग्रिम शुभकामनाएं।

धन्यवाद।